

पद १४८

(राग: छक्कड - ताल: केहरवा)

छी: होगोनि मूढा इदे निंदु तिळवळकी। दृश्य देहके नोडी नाने
देह अंदु सोक्की। ब्रह्म हुली नी इहु मायि कुरी हिंद सिक्की।
सुखसाम्राज्य निधि नी, बिडु ई विषय सुख भिक्की। ई माया केळो
यारक्की। ता शुन्यवागी काणक्की। निजआत्मदल्ली हूटकी।

शिवभक्तरिगे सण्णक्की। अज्ञानी जनके दोड्डाकी। आगी चलवक्की
बिळुताळतक्की। चिन्मार्ताड ब्येळकिगे मायितो मायद चुक्की ॥१॥